इकाई–6 : अपठित गद्यांश

गद्यांश 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

गद्यांश– (1) ''धर्म एक व्यापक शब्द है। मजहब, मत, पंथ या सम्प्रदाय सीमित रूप है। संसार के सभी धर्म मूल रूप में एक ही हैं। सभी मनुष्य के साथ सद्व्यवहार सिखाते हैं। ईश्वर किसी विशेष धर्म या जाति का नहीं है। सभी मानवों में एक प्राण स्पंदन होता है, उसके रक्त का रंग भी एक ही है। सुख-दुःख का भाव-बोध भी उनमें एक जैसा है। आकृति और वर्ण, वेशभूषा और रीति-रिवाज तथा नाम ये सब ऊपरी वस्तुएँ हैं। ईश्वर ने मनुष्य या इंसान को बनाया है। इंसान ने धर्म या इंसान को बनाया है। ध्यान रहे मानवता या इंसानियत से बड़ा धर्म या मजहब दूसरा कोई नहीं है। वह मिलना सिखाता है, अलगाव नहीं, धर्म तो एकता का द्योतक है।''

प्रश्न (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्रश्न (2) सबसे बड़ा धर्म कौन–सा है?

प्रश्न (3) बाह्य वस्तुएँ क्या हैं?

उत्तर– (1) शीर्षक- धर्म की महत्ता।

(2) सबसे बड़ा धर्म है- मानवता या इंसानियत।

(3) आकृति और वर्ण, वेशभूषा और रीति-रिवाज तथा नाम- ये सब बाह्य वस्तुएँ हैं।

गद्यांश 2. ''मानव का अकारण ही मानव के प्रति अनुदार हो उठना न केवल मानवता के लिए लज्जाजनक है वरन् अनुचित भी है। वस्तुतः यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है। केवल इसलिए कि कोई मनुष्य बुद्धिहीन है अथवा दरिद्र, वह घृणा का तो दूर रहा उपेक्षा का भी पात्र नहीं होना चाहिए। मानव तो इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह मानव है, भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।'' (लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– मानवता का आदर।

(2) यथार्थ मनुष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर– मानवता का आदर करना जानते हो एवं कर सकते हो।

(3) उपर्युक्त गद्य का सारांश लिखिए।

उत्तर– भगवान ने मानव की सर्वश्रेष्ठ रचना की है जिससे उसमें मानवता का गुण समाहित है। मानव दरिद्र या बुद्धिहीन होने पर भी घृणा का पात्र नहीं होना चाहिए।

गद्यांश 3. ''मानव जीवन में निरोग और स्वस्थ शरीर का अत्यधिक महत्व है। रोगों से मुक्त मानव ही सब कार्यों को सफल करने में सक्षम होता है। बीमार व्यक्ति शक्ति के अभाव में संसार में दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। सुख उससे कोसों दूर रहता है। शरीर को सुखमय एवं स्वस्थ बनाने के लिए खेलना, तैरना, दौड़ना, भ्रमण करना अत्यन्त आवश्यक है। स्वस्थ मानव ही सुख एवं शांति के स्वप्न में विहार करता है।'' (लो.प्र.बैं.)★★★

प्रश्न–(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(2) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लगभग 30 शब्दों में लिखिए।

(3) शरीर में निरोगता कैसे आती है ?

उत्तर– (1) स्वस्थ शरीर ।

(2) स्वस्थ शरीर ही सुखमय जीवन का आधार है, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह स्वस्थ रहने के लिए, रोगों से बचाव के लिए क्रीड़ा आदि को अपनाएँ।

(3) शरीर में निरोगता खेलने, तैरने, दौड़ने, घूमने से आती है।

गद्यांश 4. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसका उचित शीर्षक व सारांश लिखिए–

''कई लोग समझते हैं कि अनुशासन और स्वतन्त्रता में विरोध है, किन्तु वास्तव में यह भ्रम है। अनुशासन के द्वारा स्वतंत्रता छिन नहीं जाती, बल्कि दूसरों की स्वतन्त्रता की रक्षा होती है । सड़क पर चलने के लिए हम लोग स्वतन्त्र हैं, हमें बायीं तरफ से चलना चाहिए किन्तु चाहें तो हम बीच में भी चल सकते हैं । इससे हम अपने ही प्राण संकट में डालते हैं, दूसरों की स्वतन्त्रता भी छीनते हैं । विद्यार्थी भारत के भावी निर्माता हैं। उन्हें अनुशासन के गुणों का अभ्यास अभी से करना चाहिए जिससे वे भारत के सच्चे सपूत कहला सकें।'' *(2018)*★★★

प्रश्न–(1) उपरोक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए ।

उत्तर– 'स्वतंत्रता और अनुशासन का महत्त्व'।

(2) गद्यांश का सारांश।

उत्तर– जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है। इसका पालन करने से हम और सभी सुरक्षित रहते हैं। इसलिए अनुशासन का अवश्य पालन करना चाहिए।

गद्यांश 5. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसका उचित शीर्षक व सारांश लिखिए–

''शिक्षा अपने सीमित अर्थ में जीवन के लिए तैयारी मानी जा सकती है, परन्तु व्यापक अर्थ में वह जीवन का चरम उद्देश्य ही रहेगी । इन सीमित और व्यापक अर्थों में कोई अन्तर विरोध सम्भव नहीं है क्योंकि सीमित व्यापक अर्थ में अन्तर्भूत रहता है । मनुष्य व्यापक समष्टि का अंग और विश्व नागरिक होकर भी किसी देश–विशेष का नागरिक और समाज–विशेष का एक अंग होता है । और इस नाते विशेष कर्त्तव्यों तथा अधिकारों से घिरा रहता है । विसंगति तब उत्पन्न होती है, जब शिक्षा निरुद्देश्य तैयारी मात्र रह जाती है क्योंकि वह परिणामहीन क्रियाशीलता है।'' ★★

प्रश्न–(1) सीमित और व्यापक अर्थ में क्या सम्बन्ध है ?

(2) शिक्षा का व्यापक अर्थ क्या है ?

(3) उपर्युक्त अवतरण का शीर्षक लिखिए।

(4) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर– (1) एक चीज के सीमित तथा व्यापक दो अर्थ हो तो उनमें पारस्परिक विरोध नहीं होता, अपितु सीमित अर्थ व्यापक अर्थ में समाया रहता है। (2) शिक्षा का व्यापक अर्थ जीवन का चरम लक्ष्य होता है। सृष्टि के मध्य विद्यमान व्यक्ति शिक्षा के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त करके जीवन के महान उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। (3) 'शिक्षा का उद्देश्य।' (4) शिक्षा का मूल लक्ष्य जीवन को उत्कर्ष तक पहुँचाना है अतः शिक्षा को निरुद्देश्य या परिणाम रहित नहीं होना चाहिए।

गद्यांश 6. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (लो.प्र.बैं.)

''आप हमेशा अच्छी जिंदगी जीते आ रहे हैं। आप हमेशा बढ़िया कपड़े, बढ़िया जूते, बढ़िया घड़ी, बढ़िया मोबाईल जैसे दिखावों पर बहुत खर्च करते हैं मगर आप अपने शरीर पर कितना खर्च करते हैं ? इसका मूल्यांकन जरूरी है। यह शरीर अनमोल है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो आप ये सारे सामान किस पर टांगेंगे ? अतः स्वयं का स्वस्थ रहना सबसे जरूरी है एवं स्वस्थ रहने में हमारे खान–पान का सबसे बड़ा योगदान है।''

प्रश्न (1) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

प्रश्न (2) अनमोल क्या है?

प्रश्न (3) 'शुद्ध' और 'असली' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर– (1) शीर्षक– स्वस्थ शरीर। (2) शरीर अनमोल है।

(3) शुद्ध– अशुद्ध, असली–नकली।

गद्यांश 7. ''श्रम साधना करने वाले को यश प्राप्त होता है और वैभव भी। श्रम करके एक निर्धन परिवार का बालक भी उच्च पद पर आसीन हो जाता है और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बदल देता है। श्रम करके हमें अलौकिक आनंद की प्राप्ति होती है तथा परम संतोष का अनुभव होता है। परिश्रम सफलता का मूल मंत्र है। बिना परिश्रम किए किसी को भी सफलता नहीं मिलती है।..... परिश्रम का कोई विकल्प नहीं। अतः परिश्रमी बनो।''

प्रश्न (1) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

प्रश्न (2) 'श्रम' शब्द का पर्यायवाची शब्द लिखिए।

प्रश्न (3) सफलता का मूल मंत्र क्या है?

उत्तर– (1) शीर्षक– श्रम का महत्व।

(2) 'श्रम' का पर्यायवाची–मेहनत।

(3) सफलता का मूलमंत्र है– परिश्रम या मेहनत।

गद्यांश 8. ''सामाजिक जीवन के अन्तर्विरोधों को समाप्त करने का लक्ष्य ही सामाजिक समरसता का आधार है। समाज एक सम्पूर्ण इकाई है, जिसमें मनुष्य की शक्तियों के विकास की सभी संभावनाएँ निहित हैं। व्यक्ति की शक्तियाँ जीवन की विभिन्न दिशाओं को उद्घाटित करने वाली भले हो, किन्तु समष्टि के साथ वह अपनी संवेदना में एक हृदय बनकर स्पंदित हो, पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सहानुभूति तो सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्त है। (2022)

प्रश्न (1) गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्रश्न (2) सामाजिक समरसता का क्या आधार है?

प्रश्न (3) सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्तें क्या हैं?

उत्तर– (1) शीर्षक– सामाजिक समरसता।

(2) सामाजिक जीवन के अन्तर्विरोध को समाप्त करने का लक्ष्य ही सामाजिक समरसता का आधार है।

(3) पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सहानुभूति सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्त है।

(ब) अपठित पद्यांश

पद्यांश 1. माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
ज्ञान अर्पित प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।।
(लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– समर्पण।

(2) कवि भारत माँ को क्या अर्पित करना चाहता है?

उत्तर– कवि भारत माता को ज्ञान, प्राण एवं रक्त का कण–कण अर्पित करना चाहता है।

(3) देश की धरती का हम पर क्या ऋण है?

उत्तर– देश की धरती का हमारे ऊपर बहुत ऋण हैं। धरती माँ ने हमें जीवन दिया है। मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। जिस प्रकार हम अपने माता–पिता का ऋण कभी नहीं चूका सकते उसी प्रकार हम देश की धरती का ऋण कभी नहीं चूका सकते।

पद्यांश 2. गगन–गगन तेरा यश फहरा,
पवन–पवन तेरा बल गहरा,
क्षिति–जल–नभ पर डाल हिंडोले,
चरण–चरण संचरण सुनहरा,
ओ ऋषियों के वेश,
प्यारे भारत देश। (लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– प्यारे भारत देश।

(2) आप अपने देश को प्यार क्यों करते हैं?

उत्तर– भारत एक बहुत ही खूबसूरत देश है और मैं अपने देश से

बहुत प्यार करता हूँ। भारत विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक और सामाजिक स्थितियों वाला एक महान देश है। यह सबसे अधिक आबादी वाले देशों में से एक है, हम सभी आपस में बहुत प्रेम और सद्भाव से मिल जुल कर एक साथ रहते हैं।

(3) उक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– उपरोक्त पंक्तियाँ प्रख्यात कवि एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री माखनलाल चतुर्वेदी की कविता प्यारे भारत देश से ली गया है, इसमें कवि भारत देश की गरिमा का बखान कर रहे हैं कि सारे संसार में अर्थात् जल, थल व नभ में भारत देश का यश फैल रहा है।

पद्यांश 3. जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको,
पर पीछे–पीछे अक्ल जगी मुझको,
जी लोगों ने तो बेंच दिये ईमान,
जी आप न हो सुनकर ज्यादा हैरान,
मैं सोच–समझकर आखिर,
अपने गीत बेंचता हूँ,
जी हाँ हुजूर मैं गीत बेंचता हूँ'' (लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– मैं गीत बेचता हूँ।

(2) कवि को गीत बेचने में शर्म क्यों नहीं आती?

उत्तर– ''गीत फरोश'' कविता भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य व्यक्तित्व को परिभाषित करती है। जीवन की जटिल स्थितियों के कारण कविकर्म कंठित होता गया। पूँजीवादी व्यवसायी युग में हर चीज बिकाऊ हो गई। इस कविता में यह स्थिति है कि कवि को जीने के लिए गीत बेचने वाला बन जाना पड़ा।

(3) उक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– कवि अपनी मनोव्यवस्था को व्यक्त करता हुआ कहता है कि शुरू-शुरू में तो मुझे गीत बेचने में बेहद लज्जा का अनुभव हुआ। मुझे बराबर लगता रहा कि कोई अपने अन्तर्जगत के संवेदनानुभावों को भी क्या बेच सकता है ? कविता तो आत्मदान की वस्तु है, वह व्यापार या नफा कमाने की चीज नहीं। उसे बाजार की वस्तु बनाना उसके मूल्य को गिराना है। किन्तु कुछ दिन बाद मुझे अक्ल आई कि इस देश में लोग अपना ईमान या चरित्र बेच रहे हैं। उन्हें किसी भी बुरे काम पर पश्चाताप नहीं होता है और पैसा कमाने के नाम पर अन्धे होकर कुछ भी कर सकते हैं।

पद्यांश 4. बहिन आज फूली समाती न मन में
तडित आज फूली समाती न धन में,
घटा है न झूली समाती गगन में,
लता आज फूली समाती न बन में। (लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त पंक्तियाँ किस ऋतु की ओर संकेत करती है?

उत्तर– वर्षा ऋतु की ओर संकेत है।

(2) बहन के खुश होने का क्या कारण है?

उत्तर– राखी के त्यौहार पर बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधने के लिए उत्सुक है। वह बहुत खुश है। संसार की सारी खुशी आज उसे मिल गई है।

(3) उक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– कवयित्री द्वारा रचित कविता राखी की चुनौती में बहन राखी का त्यौहार आने पर बहुत खुश है। संसार की सारी खुशियाँ उसे मिल गई है। वह फूली नहीं समा रही है। वह बहुत खुश है।

पद्यांश 5. रॉपी से उठी हुई आँखों ने मुझे,
क्षण भर टटोला,
और फिर
जैसे बतियाते स्वर में,
वह हँसते हुए बोला
बाबू सच कहूँ–मेरी निगाह में,
न कोई छोटा है, (लो.प्र.बैं.)
न कोई बड़ा है,
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।
जो मेरे सामने,
मरम्मत के लिए खड़ा है।

प्रश्न– (1) मोची हर आदमी को किस रूप में देखता है?

उत्तर– जूतों को देखने के आदी मोचीराम को हर जूते की पहचान है, जूते से ही वह आदमी को पहचानता है, इसलिए हर आदमी उसके लिए एक जोड़ी जूता है।

(2) हर आदमी की मरम्मत से मोची का क्या अभिप्राय है।

उत्तर– जूते की मरम्मत करवाने के लिए आने वाला व्यक्ति मोचीराम को अपना नौकर समझकर मालिक की तरह हुकुम चलाता है। मोची की निगाह में न कोई छोटा आदमी है और न कोई बड़ा आदमी है। मोची के लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।

(3) उपर्युक्त काव्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस पद्यांश में मोची के दु:ख को व्यक्त किया गया है, मोची की नजर में कोई भी आदमी न बड़ा, न छोटा है, सभी समान है। मोची के सामने हर आदमी एक जोड़ी जूता है जो मरम्मत के लिए आते हैं।

पद्यांश 6. वीरों का कैसा हो बसंत?
आ रही हिमालय से पुकार।
है उदधि गरजता बार–बार
प्राची, पश्चिम, भू, नभ उपार,
सब पूछ रहे हैं दिग–दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत? (लो.प्र.बैं.)

प्रश्न– (1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– वीरों का कैसा हो बसंत?

(2) वीरों का बसंत कैसा होना चाहिए?

उत्तर– कवियित्री कहती है कि वीरों के जीवन में बसंत तब आएगा जब वे शांति से खुशियाँ मना पाएंगे अन्यथा उनका बसंत युद्ध में ही बीत जाएगा।

(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– यह काव्यांश प्रसिद्ध कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा रचित है। यह अपनी कविताओं में स्वच्छंदता को उजागर करती है, एक वीर सैनिक सारी सुख सुविधा को त्यागकर देश की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहता है। उसका बसंत कैसा होगा यह वर्णन किया है।

पद्यांश 7. ''कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है।
जा–जाकर खाली हाथ लौट वह आता है।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।''

प्रश्न– (1) चींटी की मेहनत क्यो बेकार नहीं होती?

(2) गोताखार को मोती कब प्राप्त होता है?

(3) हमारी रगों में साहस कौन भरता है?

(4) 'कोशिश' का पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(5) काव्यांश का उचित शीर्षक दीजिए

उत्तर– (1) चींटी दीवार पर चढ़ते हुए अनेक बार नीचे गिरती है। फिर भी वह प्रयत्न करना नहीं छोड़ती। एक दिन वह दीवार पर चढ़ ही जाती है। इस प्रकार उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती।

(2) गोताखोर कई बार खाली हाथ वापस आता है, किन्तु एक न एक दिन उसकी मुट्ठी में मोती आ ही जाता है। इस प्रकार निरंतर प्रयत्न करने से वह मोती प्राप्त कर लेता है।

(3) हमारी असफलता ही हमें सफलता पाने का उत्साह देती है। जब हम किसी काम में बार–बार असफल होकर फिर से प्रयत्न करना शुरू करते हैं तो एक–न–एक दिन सफलता मिल ही जाती है।

(4) 'कोशिश' का पर्यायवाची शब्द- प्रयत्न, प्रयास, श्रम।

(5) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक ''कोशिश का महत्व' या 'श्रम का महत्व' है।

पद्यांश (8) ''कल हमारी कुटिया में बिना पूछे तूफान दाखिल हो जाते थे। आज हमारे घरों में बिन दरवाजा खटखटाए जो चले आ रहे हैं। उनसे हमारी दीवारें और छतें नहीं हमारी बुनियाद चरमरा रही है। **(2022)**

प्रश्न (1) कल हमारी कुटिया में बिना पूछे कौन दाखिल हो जाते थे।

प्रश्न (2) हमारी बुनियाद क्यों चरमरा रही है?

प्रश्न (3) बुनियाद चरमराने से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर– (1) कल हमारी कुटिया में बिन पूछे तूफान दाखिल हो जाते थे।

(2) आज हमारे घरों में बिन दरवाजा खटखटाए जो चले जा रहे हैं, उनसे हमारी बुनियाद चरमरा रही है।

(3) बुनियाद चरमराने से कवि का यह तात्पर्य है कि हमारी भारतीय संस्कृति को आघात लग रहा है।